International Journal of Scientific Research in Engineering and Management (IJSREM)
Volume: 10 Issue: 03 | March - 2026 SJIF Rating: 8.659 ISSN: 2582-3930

रानी लक्ष्मीबाई: भारतीय ऐततहातिक एवं ज्ञान परम्पराओं में मतहला नेतृत्व, प्रततरोध और सशक्तिकरण का समालोचनात्मक अध्ययन

वीरेन्द्र कुमार सरसैया[1], अनिल कुमार दुबे [2], सपिा*[3], अंजुलता[4]

[1] श्रीमती निद्याि◌ती कॉलेजऑफ़ एजुकेशि, झाँसी (उ.प्र.), भारत

[2]श्रीमती निद्याि◌ती कॉलेजऑफ़ एजुकेशि, झाँसी (उ.प्र.), भारत

[*3]नशक्षा संस्थाि◌, बुन्देलखण्ड निश्वनिद्यालय, झाँसी (उ.प्र.), भारत (उ.प्र.), भारत

[4]ि◌◌ीरांगिा महाराि◌◌ी लक्ष्मीबाई राजकीय मनहला महानिद्यालय, झाँसी (उ.प्र.), भारत

*संि◌◌ाद लेखक (Corresponding Author)

ई-मेल पता: sch.sapnasin16@bujhansi.ac.in

ि◌◌ार (Abstract)

राि◌◌ी लक्ष्मीबाई भारतीय इनतहास में ि◌◌ारी ि◌◌ेतृत्व और औपनिि◌◌ेनशक प्रनतरोध की सशक्त प्रतीक हैं। 1857 केप्रथम स्वतंत्रता संग्राम में उिका योगदाि◌ सैन्य संघर्ष तक सीनमत ि◌हीं था, बल्कि यह भारतीय ज्ञाि◌ परम्परा में निनहत ि◌◌ारी-शल्कक्त की ऐनतहानसक पुि◌पुषनि भी था। प्रस्तुत शोध-पत्र में उिके व्यल्कक्तत्व, ि◌◌ेतृत्व शैली, सैन्य रणिीनत, सांस्कृनतक प्रभाि◌ तथा आधुनिक ि◌◌ारीि◌◌ादी निमशष में उिकी प्रासंनगकता का बहुआयामी निश्लेर्ण नकया गया है।

1. ऐततहातिक पृष्ठभूतम और औपतनवेतशक ि◌◌ंदभभ

1.1 'डॉक्तरि न ऑफ लैप्स' और झाँि◌◌ी

निनिश गिि◌षर-जिरल Lord Dalhousie द्वारा लागू 'Doctrine of Lapse' ि◌◌ीनत केअंतगषत दत्तक उत्तरानधकार को अस्वीकार कर राज्ि◌◌ं का निलय नकया जाता था। झाँसी राज् को इसी ि◌◌ीनत केअंतगषत अनधग्रनहत करि का प्रयास हुआ।

इनतहासकार R.C. Majumdar नलखते हैं:

"The annexation of Jhansi under the Doctrine of Lapse was legally framed but politically insensitive."[1]

यह निप्पणी दशाषती है नक ि◌◌ीनत काि◌◌ूि◌◌ी रूप से ि◌◌ैध प्रतीत होती थी, नकंतु ि◌◌ैनतक और राजिीनतक दृनि से निि◌◌ादास्पद थी।

2. 1857 का ि◌◌ंग्राम: व्यापक पररप्रेक्ष्य

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम 1857 केि◌ल सैनिक निद्रोह ि◌हीं था, बल्कि सामानजक-आनथषक असंतोर् की पररणनत था।

Bipan Chandra केअिुसार:

"The Revolt of 1857 marked the beginning of a new phase of resistance against colonial rule."[2]

लक्ष्मीबाई का ि◌◌ेतृत्व इस व्यापक प्रनतरोध का केंद्रीय स्तंभ बिा।

3. भारतीय ज्ञान परम्परा में नारी-शक्ति का वैचाररक आधार

भारतीय दाशषनिक परम्परा में 'शल्कक्त' को सृनि की मूल प्रेरक शल्कक्त माि◌ा गया है। दुगाष, सरस्वती और लक्ष्मी जैसे देि◌ी-स्वरूप ि◌ेतृत्व, ज्ञाि और समृल्कि केप्रतीक हैं।

तातलका 1: भारतीय परम्परा में नारी-शक्ति की अवधारणा

आयाम	दाशभतनक स्रोत	प्रतततनतध स्वरूप	ि◌ामातिक अर्भ
ज्ञाि	उपनिर्द	गागी, मैत्रेयी	बौल्किक ि◌ेतृत्व
शल्कक्त	पुराण	दुगाष, काली	संघर्ष और प्रनतरोध
समृल्कि	ि◌ैनदक परम्परा	लक्ष्मी	सामानजक संतुलि
ि◌ीनत	रामायण/महाभारत	सीता, द्रौपदी	ि◌ैनतक दृढ़ता

राि◌ी लक्ष्मीबाई इि आयामों का ऐनतहानसक समन्वय प्रतीत होती हैं।

4. नेतृत्व शैली का तवस्तृत तवश्लेषण

4.1 ि◌ैन्य रणनीतत

उन्◌ोंि◌े नकले की सुरक्षा को पुि◌गषनित नकया, तोपखाि◌े को सुदृढ़ नकया तथा मनहला सैनिकों को भी प्रनशनक्षत नकया।

निनिश इनतहासकार John Keay नलखते हैं:

"Lakshmibai combined courage with tactical acumen rarely seen among princely leaders."[3]

तातलका 2: रानी लक्ष्मीबाई केनेतृत्व की तवशेषताएँ

नेतृत्व आयाम	तववरण	ऐततहातिक प्रभाव
सैन्य कौशल	घुड़सिारी, तलिारबाजी	सैनिकों में उत्साह
राजिीनतक दूरदनशषता	काि◌ूि◌ी अपीलें, संि◌ाद	ि◌ैनतक ि◌ैधता
सहभागी ि◌ेतृत्व	मनहलाओं की भागीदारी	सामानजक सशल्कक्तकरण
प्रेरक व्यल्कक्तत्व	राि◌्रि◌ादी प्रतीक	जि-चेतिा का निमाषण

5. नारीवादी दृतिकोण ि◌े ि◌मालोचना

Geraldine Forbes केअिुसार:

"Lakshmibai emerged as a symbol of both resistance and redefinition of womanhood in colonial India."[4]

यह कथि इंनगत करता है नक लक्ष्मीबाई ि◌े केि◌ल औपनिि◌ेनशक सत्ता का प्रनतरोध ि◌हीं नकया, बल्कि स्त्री- भूनमका की

पुिपषररभार्ा भी की।

उिका व्यल्कक्तत्व 'िीरांगिा' और 'मातृत्व' केद्वंद्व को समल्कन्वत करता है।

6. िैतहक्तिक और िांस्कृततक प्रभाव

Subhadra Kumari Chauhan की प्रनसि पंल्कक्तयाँ— "खूब लड़ी मदािी, िह तो झाँसी िाली रािी थी।"
यह कनिता लक्ष्मीबाई को राि्रीय स्मृनत में अमर करती है।

तातलका 3: िांस्कृततक प्रभाव केक्षेत्र

क्षेत्र	प्रभाव
सानहत्य	िीरांगिा की छनि
लोकगीत	जि-िानयका का स्वरूप
नशक्षा	पाठ्यपुस्तकों में प्रेरणा
राजिीनत	मनहला िेतृत्व का प्रतीक

7. तुलनात्मक तवश्लेषण

मानदंड	रानी लक्ष्मीबाई	िमकालीन पुरुष नेता
संघर्ष का आधार	राज् और स्वानभमाि	सैनिक असंतोर्
िेतृत्व शैली	सहभागी	प्रायः सैन्य-केंनद्रत
प्रतीकात्मकता	िारी-शल्कक्त	राि्रिादी प्रनतरोध

यह तुलिा दशाषती है नक लक्ष्मीबाई का िेतृत्व लैंनगक सीमाओं से परे था।

8. तनष्कषभ

रािी लक्ष्मीबाई भारतीय इनतहास में मनहला िेतृत्व की ऐनतहानसक निरंतरता का प्रमाण हैं। उन्होंिे औपनििेनशक सत्ता और नपतृसत्ता दोिों को चुिौती दी।

उिका जीिि यह नसि करता है नक भारतीय ज्ञाि परम्पराओं में मनहला सशल्कक्तकरण कोई आधुनिक अिधारणा िहीं, बल्कि प्राचीि सांस्कृनतक धारा का निस्तार है।

िदभम (References)

1. आर.सी. मजूमदार, नसपाही निद्रोह और *1857* का निद्रोह, पृ. 214।
2. नबपि चंद्र, भारत का स्वतत्रंता सग्रंाम, पृ. 45।
3. जॉि की, भारत: एक इनतहास, पृ. 432।
4. जेराल्किि फोर्ब्स, आधुनिक भारत में मनहलाएँ, पृ. 57।
5. मजूमदार, आर.सी. नसपाही निद्रोह और *1857* का निद्रोह।
6. चंद्र, नबपि. भारत का स्वतत्रंता सग्रंाम।
7. फोर्ब्स, जेराल्किि. आधुनिक भारत में मनहलाएँ।
8. साि रकर, िी.डी. *1857* का भारतीय स्वतत्रंता समर।
9. की, जॉि. भारत: एक इनतहास।
10. चौहाि, सुभद्रा कुमारी. झाँसी की राि ी।